संस्कृतम्

Dr.Upendar Dubey

संस्कृत अभ्यास – नई शुरुआत

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

प्रस्तावना

भारत केवल एक भौगोलिक राष्ट्र नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति, दर्शन, अध्यात्म, विज्ञान और मानवता की महान परम्पराओं का केन्द्र है। इस महान सभ्यता की आत्मा यदि किसी भाषा में सुरक्षित है, तो वह संस्कृत है। यह केवल एक प्राचीन भाषा नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान-परम्परा का मूल आधार, हमारी संस्कृति का प्राण और आत्मबोध का सर्वोत्तम माध्यम है।

संस्कृत के बिना भारत की वास्तविक भव्यता, उसके गौरवशाली इतिहास, उसके नीतिमूल्यों, जीवन-दर्शन, ऋषियों की अमूल्य शिक्षाओं, वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, गीता, पुराणों तथा असंख्य ग्रन्थों को उनकी मौलिकता में समझना सम्भव नहीं है। अनुवाद हमें केवल अर्थ दे सकते हैं, किन्तु मूल संस्कृत हमें भाव, दर्शन और अनुभव प्रदान करती है।

संस्कृत केवल अतीत की भाषा नहीं है; यह वर्तमान और भविष्य दोनों की भाषा है। यह ऐसी भाषा है जो मनुष्य को केवल पढ़ना नहीं सिखाती, बल्कि सोचने, समझने, चरित्र निर्माण करने और श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा देती है। संस्कृत हमें सिखाती है कि जीवन का उद्देश्य केवल सफलता प्राप्त करना नहीं, बल्कि स्वयं को जानना, समाज के लिए उपयोगी बनना और सत्य, धर्म तथा करुणा के मार्ग पर चलना है।

आज आवश्यकता है कि संस्कृत को केवल परीक्षा का विषय न समझकर जीवन की भाषा बनाया जाए। यदि बाल्यावस्था से सरल और व्यवस्थित रूप में संस्कृत का अध्ययन कराया जाए, तो कोई भी विद्यार्थी इस भाषा को सहजता से सीख सकता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए "संस्कृत अभ्यास – नई शुरुआत" के प्रथम पुस्तक-श्रृंखला का निर्माण किया गया है।

इस पुस्तक-श्रृंखला का उद्देश्य

बहुत से विद्यार्थी संस्कृत सीखना चाहते हैं, किन्तु कठिन व्याकरण, जटिल शैली और क्रमबद्ध सामग्री के अभाव में प्रारम्भ ही नहीं कर पाते। यह पुस्तक-श्रृंखला विशेष रूप से ऐसे विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है जो शून्य स्तर **(Zero Level)** से संस्कृत सीखना चाहते हैं।

इस श्रृंखला में प्रत्येक विषय को अत्यन्त सरल, क्रमबद्ध तथा व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। ताकि विद्यार्थी केवल पढ़े ही नहीं, बल्कि बोलने और लिखने का भी अभ्यास कर सके।

इस पुस्तक-श्रृंखला का उद्देश्य केवल भाषा-शिक्षण नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों, अनुशासन, आत्मविश्वास तथा चरित्र निर्माण को भी विकसित करना है।

संस्कृत हमें केवल शब्द नहीं देती, बल्कि जीवन जीने की दिशा देती है। हमारे ऋषियों ने हजारों वर्षों के अनुभव को छोटे-छोटे सूत्रों और सुभाषितों में संजोया है। ये आज भी उतने ही उपयोगी हैं जितने प्राचीन काल में थे।

सा विद्या या विमुक्तये।
वही विद्या है जो अज्ञान और बन्धनों से मुक्त करे।

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।
विद्या का धन सभी धनों में श्रेष्ठ है।

सत्यं वद। धर्मं चर।
सत्य बोलो और अपने कर्तव्य का पालन करो।

सत्यमेव जयते नानृतम्।
अन्ततः विजय सत्य की ही होती है।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।
उदार हृदय वाले लोगों के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है।

परोपकाराय सतां विभूतयः।
सज्जनों का जीवन और उनकी सम्पत्ति दूसरों के कल्याण के लिए होती है।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
कार्य केवल कल्पनाओं से नहीं, परिश्रम से पूरे होते हैं।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी महान हैं।

विद्यार्थियों के लिए संदेश

यह पुस्तक केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि अभ्यास करने के लिए तैयार की गई है। प्रत्येक अध्याय को धैर्यपूर्वक पढ़ें, बार-बार दोहराएँ, संस्कृत बोलने का प्रयास करें और नियमित अभ्यास करें। धीरे-धीरे संस्कृत आपके लिए कठिन विषय नहीं, बल्कि सरल और प्रिय भाषा बन जाएगी।

याद रखें—

श्रद्धा ज्ञान देती है।
नम्रता सम्मान देती है।
योग्यता स्थान देती है।
निरन्तर अभ्यास सफलता देता है।

यदि प्रतिदिन थोड़े समय के लिए भी संस्कृत का अध्ययन किया जाए, तो कुछ ही महीनों में भाषा पर अच्छा अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।

हमारी कामना

हमारा विनम्र प्रयास है कि यह पुस्तक-श्रृंखला प्रत्येक विद्यार्थी,अभिभावक तथा संस्कृत-प्रेमी के लिए उपयोगी सिद्ध हो। यदि इस प्रयास से एक भी विद्यार्थी संस्कृत सीखने के लिए प्रेरित होता है, भारतीय संस्कृति को समझता है और अपने जीवन में श्रेष्ठ मूल्यों को अपनाता है, तो हमारा परिश्रम सफल होगा।

आइए, हम सब मिलकर संस्कृत को पुनः जन-जन की भाषा बनाने का संकल्प लें।

जयतु संस्कृतम्।जयतु भारतम्।

संस्कृत कक्षा – प्रथम दिवसः

विषय**:** मूल परिचय, लिंग, सर्वनाम, क्रिया, स्थान, समय, विभक्ति, संख्याएँ

1. परिचय **(Introduction)**

- मम नाम उपेन्द्रः। – मेरा नाम उपेन्द्र है।
- भवतः नाम किम्? – आपका नाम क्या है? (पुरुष के लिए)
- भवत्याः नाम किम्? – आपका नाम क्या है? (स्त्री के लिए)

उदाहरण**:**

  - पुंलिङ्गः**:** मम नाम धीरजः। भवतः नाम किम्?
  - स्त्रीलिङ्गः**:** मम नाम गायत्री। भवत्याः नाम किम्?

2. लिंग परिचय **(Gender Recognition)**

- दूरस्थ **(Far)** वस्तुएँ **– "**सः**,** सा**,** तत्**"**
  - सः बालकः – वह लड़का है। (पुंलिंगः)
  - सा बालिका – वह लड़की है। (स्त्रीलिंगः)
  - तत् फलम् – वह फल है। (नपुंसकलिंगः)
- समीपस्थ **(Near)** वस्तुएँ **– "**एषः**,** एषा**,** एतत्**"**
  - एषः गायकः – यह गायक है। (पुंलिंगः)
  - एषा नायिका – यह नायिका है। (स्त्रीलिंगः)
  - एतत् पुष्पम् – यह पुष्प है। (नपुंसकलिंगः)

3. स्वीकृति और निषेध **(Yes / No)**

- एषः नायकः वा? – क्या यह नायक है?
  - आम्, एषः नायकः। – हाँ, यह नायक है।
  - न, एषः शिक्षकः। – नहीं, यह शिक्षक है।

4. स्थानवाचक शब्द **(Place Words)**

संस्कृत	अर्थ
अत्र	यहाँ
तत्र	वहाँ
कुत्र	कहाँ?

अन्यत्र	अन्य जगह
सर्वत्र	हर जगह
एकत्र	एक ही जगह

-

  उदाहरण:
    - रामः अत्र अस्ति। – राम यहाँ है।
    - लेखकः कुत्र अस्ति? – लेखक कहाँ है?

5. षष्ठी विभक्ति **(Possessive Case – 'का', 'के', 'की')**

- बालकस्य नाम रामः। – बालक का नाम राम है।
- सीतायाः पतिः रामः। – सीता का पति राम है।
- रूप बदलने के उदाहरण:
    - बालकः → बालकस्य
    - सीता → सीतायाः
    - मापिका → मापिकायाः

6. क्रियाएँ **(Verbs)**

- कर्म करनेवाले **(Third Person)**
    - रामः पठति। – राम पढ़ रहा है।
    - बालकः गच्छति। – बालक जा रहा है।
    - छात्रः आगच्छति। – छात्र आ रहा है।
- आप **(Second Person)**
    - भवान् गच्छतु। – आप (पुरुष) जाएँ।
    - भवती लिखतु। – आप (स्त्री) लिखें।
- मैं **(First Person)**
    - अहं पठामि। – मैं पढ़ रहा हूँ।
    - अहं गच्छामि। – मैं जा रहा हूँ।

7. संख्या-ज्ञान **(1-5)**

संख्या	पुल्लिंग (बालकः)	स्त्रीलिंग (बालिका)	नपुंसक (फलम्)
1	एकः बालकः	एका बालिका	एकं फलम्

2	बालकद्वयम्	बालिकाद्वयम्	फलद्वयम्
3	त्रयः बालकाः	तिस्रः बालिकाः	त्रीणि फलानि
4	चत्वारः बालकाः	चतस्रः बालिकाः	चत्वारि फलानि

- संख्या: 11 – 20

संख्या	संस्कृत
1	एकम्
2	द्वे
3	त्रयः
4	चत्वारः
5	पञ्च
6	षट्
7	सप्त
8	अष्ट
9	नव
10	दश

8. समयवाचक शब्द **(Time telling)**

समय	संस्कृत
5:00	पञ्च वादनम्
5:15	सपाद पञ्च वादनम्
5:30	सार्ध पञ्च वादनम्

5:45	पादनो षड् वादनम्

क्रियाएँ **— Verbs**

गच्छति — जाता है
आगच्छति — आता है
उत्तिष्ठति — उठता है
उपविशति — बैठता है
पठति — पढ़ता है
लिखति — लिखता है
पिबति — पीता है
खादति — खाता है
हसति — हँसता है
क्रीडति — खेलता है
गायति — गाता है
नृत्यति — नाचता है
धावति — दौड़ता है
तिष्ठति — खड़ा रहता है
वदति — बोलता है
पश्यति — देखता है
यच्छति — देता है
गृह्णाति — लेता है
धारयति — धारण करता है
शृणोति — सुनता है
स्नाति — नहाता है
चिन्तयति — सोचता है
धावति — दौड़ता है
नयति — ले जाता है

सामान्य शब्द —

घर–घर के शब्द

गृहः — घर
कक्षा — क्लास
पीठिका — टेबल

आसनम् — कुर्सी
कपाटः — अलमारी
किञ्चुकम् — जैकेट
द्वारम् — दरवाजा
जालकम् — खिड़की
चित्रम् — चित्र
दीपः — दीपक

1. सः — वह (पुरुष)
2. सा — वह (स्त्री)
3. एतत् — यह (नपुंसक)
4. ते — वे (पुरुष)
5. ताः — वे (स्त्री)

A. सर्वनाम **(Pronouns) —** सरल रूप में

एकवचन **(Singular)**

- अहम् — मैं
- त्वम् — तुम
- सः — वह (पुरुष)
- सा — वह (स्त्री)
- तत् — वह (वस्तु)
- एषः — यह (पुरुष)
- एषा — यह (स्त्री)
- एतत् — यह (वस्तु)

द्विवचन **(Dual) —** दो व्यक्तियों/वस्तुओं के लिए

- आवाम् — हम दोनों
- युवाम् — तुम दोनों

बहुवचन **(Plural)**

- वयम् — हम (अनेक)
- यूयम् — तुम सब
- ते — वे (पुरुष/नपुंसक)
- ताः — वे (स्त्री)

9. अभ्यास निर्देश **(Practice Instructions)**

- प्रतिदिन अभ्यास करें।
- उत्तर संस्कृत में बोलें।
- लिंग के अनुसार सही सर्वनाम और क्रिया प्रयोग करें।

समाप्तम् **–** प्रथम दिवसः

संस्कृत अभ्यास नई शुरुआत

संस्कृत कक्षा – द्वितीय दिवसः

विषय**:** लिंग, वचन, सर्वनाम, विभक्ति, सप्ताह, समय, शिष्टाचार

1. लिंगभेद ज्ञान **(Gender Identification)**

लिंग	उदाहरण	हिन्दी अर्थ
पुल्लिंगः	सः सुधाखण्डः	वह चौक है।
	सः चषकः	वह गिलास है।
	सः चमसः	वह चम्मच है।
स्त्रीलिंगः	सा कुञ्चिका	वह चाबी है।
	सा ध्वनिमुद्रिका	वह ईयरफोन(माईक) है।
	सा जलकूपी	वह पानी की बोतल है।
नपुंसकलिंगः	तत् फलम्	वह फल है।
	तत् पुष्पम्	वह फूल है।
	तत् व्यजनम्	वह पंखा है।

2. वहुवचन **(Plural Forms)**

- बालकः → बालकाः
- बालिका → बालिकाः
- फलम् → फलानि
- उदाहरण**:**
  - बालकाः क्रीडन्ति।
  - बालिकाः गायन्ति।
  - पुष्पाणि शोभन्ते।

3. प्रश्नवाचक सर्वनाम **(Interrogative Pronouns - दूरवर्ती)**

एकवचन	बहुवचन प्रश्न	उत्तर
सः	ते के?	ते बालकाः।
सा	ताः काः?	ताः बालिकाः।
तत्	तानि कानि?	तानि पुष्पाणि।

4. समीपवर्ती प्रश्न **(Near Demonstratives)**

एकवचन	बहुवचन प्रश्न	उत्तर
एषः	एते के?	एते शिक्षकाः।
एषा	एताः काः?	एताः लेखन्यः।
एतत्	एतानि कानि?	एतानि परिचयपत्राणि।

5. सर्वनाम **–** ‘आप’ और ‘हम’ **(You and We)**

- भवतः → भवन्तः शिक्षकाः।
- भवत्याः → भवत्यः पाचिकाः।
- अहम् → वयम्: वयं लेखकाः।

6. संख्याबोध **–** ‘कति’ और ‘सन्ति’

- अत्र 10 मृगाः सन्ति। (यहां दस हिरण हैं।)
- अत्र कति मृगाः सन्ति? – यहाँ कितने मृग हैं?

7. सप्तमी विभक्ति **(Locative Case - ’में’/’पर’)**

- हस्ते कलमः अस्ति। – हाथ में कलम है।
- पेटिकायां धनम् अस्ति। – डिब्बे में पैसा है।
- शब्द रूप:

शब्द	सप्तमी रूप
हस्तः	हस्ते
विद्यालयः	विद्यालये
पेटिका	पेटिकायाम्
खातिका	खातिकायाम्

8. वासराणां नामानि **(Days of the Week)**

- सोमवासरः, मंगलवासरः, बुधवासरः, गुरुवासरः, शुक्रवासरः, शनिवासरः, रविवासरः

9. आगामी दिवस **(Future Days)**

- अद्य**:** आज
- श्वः**:** कल
- परश्वः**:** परसों
- प्रपरश्वः**:** तीन दिन बाद
- उदाहरण**:** अद्य सोमवासरः। श्वः मंगलवासरः।

10. गत दिवस **(Past Days)**

- ह्यः**:** बीता कल
- परह्यः**:** परसों (बीते दिन)
- प्रपरह्यः**:** तीन दिन पहले
- उदाहरण**:** ह्यः रविवासरः। परह्यः शनिवासरः।

11. क्रियाएँ **(Verbs – Plural & First Person)**

- वे **(They):** बालकाः गच्छन्ति, धावन्ति, खादन्ति।
- आप सभी **(You all):** भवन्तः लिखन्तु, पठन्तु, आगच्छन्तु।
- हम **(We):** वयं क्रिडामः, पश्यामः, कुर्मः।

12. शिष्टाचार वाक्य **(Polite Expressions)**

- नमस्ते – नमस्कार
- सुप्रभातम् – शुभ प्रभात
- शुभरात्रिः – शुभ रात्रि
- सुसायम् – शुभ संध्या
- क्षम्यताम् – क्षमा करें
- चिन्तामास्तु – चिंता न करें

13. प्रातः विधि **(Morning Routine)**

- मुखप्रक्षालनम् – मुँह धोना
- दन्तधावनम् – दाँत साफ करना
- स्नानम् – स्नान करना
- देवपूजनम् – पूजा करना
- भोजनम् – भोजन करना

14. संख्याः **(Numbers 11–30)**

- संख्या**: 11 – 20**

11	एकादश
12	द्वादश
13	त्रयोदश
14	चतुर्दश
15	पञ्चदश
16	षोडश
17	सप्तदश
18	अष्टादश
19	नवदश
20	विंशतिः

15. समय ज्ञान **(Time Telling)**

समय	संस्कृत
05:05	पञ्चाधिक पञ्च वादनम्
05:10	दशाधिक पञ्च वादनम्
05:50	दशोन षड् वादनम्
05:55	पञ्चोन षड् वादनम्

समाप्तम् – द्वितीय दिवसः।

संस्कृत कक्षा – तृतीयदिवसः

विषय**:** विभक्तियाँ, दिशाएँ, काल, संख्या, प्रश्नवाचक शब्द, समय आदि

1. द्वितीया विभक्ति **(Accusative Case –** कर्म विभक्ति**)**
(को क्या करता है – 'कर्म' पर प्रयोग)

| प्रथमा (Nominative) | द्वितीया (Accusative) |

| चषकः | चषकम् |

| माला | मालाम् |

| फलम् | फलम् |

- उदाहरण**:** छात्रः संस्कृतं पठति। शिक्षकः विद्यालयं गच्छति। बालिका मालां धारयति। सः घटीं पश्यति।

2. दिशाबोधक शब्द **(Direction Words)**

दिशा	संस्कृत	उदाहरण वाक्य
सामने	पुरतः	बालकस्य पुरतः कृष्णफलकम् अस्ति।
पीछे	पृष्ठतः	बालकस्य पृष्ठतः आसन्दः अस्ति।
बाएँ	वामतः	बालकस्य वामतः बालिका अस्ति।
दाएँ	दक्षिणतः	बालकस्य दक्षिणतः देवः अस्ति।
ऊपर	उपरि	बालकस्य उपरि छत्रम् अस्ति।
नीचे	अधः	बालकस्य अधः भूमिः अस्ति।

3. इतः / ततः / कुतः **(From here / there / where from)**

- अहम् इतः तत्र गच्छामि। – मैं यहाँ से वहाँ जा रहा हूँ।
- भवान् कुतः आगच्छति? – आप कहाँ से आ रहे हैं?

4. पञ्चमी विभक्ति **(Ablative Case – "से/से गिरना")**

शब्द	पञ्चमी रूप	उदाहरण
हस्तः	हस्ततः	हस्ततः लेखनी पतति।
स्थालिका	स्थालिकातः	स्थालिकातः ओदनं पतति।
जलकूपी	जलकूपीतः	जलकूपीतः जलं पतति।

5. प्रश्न **–** कथम् **/** उत्तर **–** सम्यक्

- गीतं कथम् आसीत्?
- उत्तर: गीतं सम्यक् आसीत्।

6. गति और स्वर के विशेषण

- शीघ्रम्**:** अश्वः शीघ्रं धावति।
- मन्दम्**:** हस्ती मन्दं चलति।
- उच्चैः**:** बालकः उच्चैः गायति।
- शनैः**:** बिलिका शनैः खादति।

7. चतुर्थी विभक्ति **(Dative Case – "**के लिए**")**

- पठनम् → पठनार्थम्**:** बालकः पठनार्थं विद्यालयं गच्छति।
- जलकूपी → जलकूप्यार्थम्**:** सः जलकूप्यार्थं आपणं गच्छति।
- भोजनम् → भोजनार्थम्**:** छात्रः भोजनार्थं भोजनालयं गच्छति।

8. सप्तककाराः (प्रश्नवाचक शब्द **– Seven Ws in Sanskrit)**

प्रश्न	अर्थ	उदाहरण
किम्	क्या	भवतः नाम किम्?
कुत्र	कहाँ	भवान् कुत्र तिष्ठति?

कति	कितने	अत्र कति छात्राः सन्ति?
कदा	कब	भवान् कदा विद्यालयं गच्छति?
कुतः	कहाँ से	भवान् कुतः आगच्छति?
कथम्	कैसे	गीतं कथम् आसीत्?
किमर्थम्	क्यों	भवान् किमर्थं संस्कृतं पठति?

9. भूतकाल **(Past Tense -** कृतवतु प्रत्यय**)**

लिंग	वर्तमान (गच्छति)	भूतकाल (गया/गई)
पुल्लिंगः	गच्छति → गतवान्	बालकः गच्छति → बालकः गतवान्
	लिखति → लिखितवान्	छात्रः लिखति → छात्रः लिखितवान्
स्त्रीलिंगः	गच्छति → गतवती	बालिका गच्छति → बालिका गतवती
	पठति → पठितवती	सीता पठति → सीता पठितवती

10. सहवाक्य प्रयोग **–** अपि / अहं न जानामि

- अपि (और / भी)**:** अहं पठामि, मम मित्रम् अपि पठति।
- अहं न जानामि (मुझे नहीं पता)**:** सः कथं पठति? अहं न जानामि।

11. संख्या**: – 21** से **30** तक

21 एकविंशतिः

22 द्वाविंशतिः

23 त्रयोविंशतिः

24 चतुर्विंशतिः

25 पञ्चविंशतिः

26 षड्विंशतिः

27 सप्तविंशतिः

28	अष्टाविंश तिः
29	नवविंशतिः
30	त्रिंशत्

12. समय ज्ञान **(Advanced Time Vocabulary)**

समय	संस्कृत में
05:20	विंशत्यधिक पञ्च वादनम्
05:25	पञ्चविंशत्यधिक पञ्च वादनम्
05:40	विंशतिः न्यूनं षड् वादनम्
05:35	पञ्चविंशतिः न्यूनं षड् वादनम्

समाप्तम् – तृतीय दिवसः।

संस्कृत कक्षा – चतुर्थदिवसः

विषय: अस्ति-नास्ति, स्वामित्व (Possessives), विनय (Politeness), शिष्टाचार, प्रातर्विधि आदि

1. अस्ति / नास्ति **(**है / नहीं है**)**

- भूभूक्षा अस्ति, भोजनं नास्ति। (भूख है, भोजन नहीं है)
- पीपासा अस्ति, जलं नास्ति। (प्यास है, जल नहीं है)

2. स्वामित्व **–** मम **/** भवतः **/** भवत्याः

सर्वनाम	अर्थ	उदाहरण
मम	मेरा	मम नासिका / मम पुस्तकम् / मम कलमः
भवतः	तुम्हारा (पुंलिंग)	भवतः चमषः / भवतः स्यूतः / भवतः नेत्रम्
भवत्याः	तुम्हारी (स्त्रीलिंग)	भवत्याः छत्रम् / भवत्याः जलकूपी / भवत्याः पादकोषः

3. शिष्ट वाक्य प्रयोग **(Polite Conversation)**

संस्कृत	अर्थ
आवश्यकम्	चाहिए / आवश्यक है
स्वीकरोतु	कृपया लें
मास्तु	नहीं चाहिए

पर्याप्तम्	पर्याप्त है / काफी है
धन्यवादः	धन्यवाद
स्वागतम्	स्वागत है

-
  संवाद:
    - रामः: किम् आवश्यकम्? (क्या चाहिए?)
    - श्यामः: जलम् आवश्यकम्। (जल चाहिए।)
    - रामः: स्वीकरोतु। (लीजिए।)
    - श्यामः: मास्तु, पर्याप्तम्। (नहीं चाहिए, पर्याप्त है।)
    - श्यामः: धन्यवादः। (धन्यवाद।)
    - रामः: स्वागतम्। (आपका स्वागत है।)

4. शिष्टाचार **/** प्रातर्विधि संवाद

- शिष्टाचार शब्द**:** नमस्ते / नमोनमः, सुप्रभातम्, सुसायम्, शुभरात्रिः, क्षम्यताम्, चिन्ता मास्तु।
- प्रातः विधि **(Morning routine):** मुखप्रक्षालनम्, दन्तधावनम्, शौचम्, स्नानम्, देवपूजनम्, भोजनम्।

संख्या**: – 31** से **40** तक

31 एकत्रिंशत्

32 द्वात्रिंशत्

33 त्रयस्त्रिंशत्

34 चतुस्त्रिंशत्

35 पञ्चत्रिंशत्

36 षट्त्रिंशत्

37 सप्तत्रिंशत्

38 अष्टात्रिंशत्

39 नवत्रिंशत्

40 चत्वारिंशत्

समाप्तम् – चतुर्थ दिवसः

संस्कृत अभ्यास नई शुरुआत

संस्कृत कक्षा – पञ्चमदिवसः

विषय**:** विभक्तियाँ, संबंधबोधक शब्द, कालबोधक प्रयोग, क्रिया-रूप (क्त्वा, तुमुन्), स्मृति रूप, आदि।

1. तृतीया विभक्ति **(Instrumental Case - '**के द्वारा**'/'**से**')**

- पुल्लिंगः**:**
  - कन्दुकम् → कन्दुकेन: बालकः कन्दुकेन क्रीडति।
  - सः → तेन; भवान् → भवता: जनाः लोकयानेन गच्छन्ति।
- स्त्रीलिंगः**:**
  - लता → लतया: लतया ग्रामः गम्यते।
  - लेखनी → लेखन्या: बालिका लेखन्या लिखति।
  - भवती → भवत्या

2. सह **/** विना **(With / Without)**

- सह**:** रामेण सह सीता वनम् अगच्छत्।
- विना**:** जलेन विना मीनः न जीवति।

3. अद्यतन **/** ह्यस्तन **/** श्वस्तन **(Today's / Yesterday's / Tomorrow's)**

- अद्यतन भोजनं कथम् आसीत्? (आज का भोजन कैसा था?)
- ह्यस्तन प्रश्नपत्रिका सरला आसीत्। (कल का प्रश्नपत्र सरल था।)
- श्वस्तन गमनार्थं भवान् प्रस्तुतः वा? (क्या आप कल की यात्रा हेतु तैयार हैं?)

4. गत **/** आगामी **(Past / Future)**

- गत वुधवासरे शिविरं समाप्तम् अभवत्।

- आगामी वृष्टिः निर्वाचनं भविष्यति।

5. यदा – तदा **(When – Then)**

- यदा वृष्टिं भविष्यति, तदा छत्रम् उद्घाटयतु।
- यदा शिक्षकः आगच्छति, तदा पठनं भवति।

6. स्म **(Past habitual tense –** करता था/थी**)**

- सः वने भ्रमति स्म। (वह जंगल में भ्रमण करता था।)
- अध्यापिका मम प्रशंसा करोति स्म। (शिक्षिका मेरी प्रशंसा करती थीं।)

7. अभवत् **(It happened / was)**

- अद्य वृष्टिः अभवत्। (आज वर्षा हुई।)
- अद्य संस्कृतशिविरम् अभवत्। (आज संस्कृत शिविर था।)

8. क्त्वा प्रत्यय **– (**करके**)**

धातु	क्त्वा-रूप
गम्	गत्वा
दृश्	दृष्ट्वा
कृ	कृत्वा

- उदाहरण**:** सः विद्यालयं गत्वा पठति। सा चलचित्रं दृष्ट्वा आगच्छति।

9. तुमुन् **(Infinitive –** करने के लिए**)**

धातु	तुमुन्-रूप
पठ्	पठितुम्
क्रीड्	क्रीडितुम्

- उदाहरण**:** सः पठितुम् गच्छति। भवान् क्रीडितुम् आगच्छति।

संख्या**: – 41** से **50** तक

41	एकचत्वारिंशत्
42	द्विचत्वारिंशत्
43	त्रिचत्वारिंशत्
44	चतुश्चत्वारिंशत्
45	पञ्चचत्वारिंशत्

46 षट्चत्वारिंशत्

47 सप्तचत्वारिंशत्

48 अष्टाचत्वारिंशत्

49 नवचत्वारिंशत्

50 पञ्चाशत्

समाप्तम् – पञ्चम दिवसः

संस्कृत अभ्यास नई शुरुआत

संस्कृत कक्षा – षष्ठदिवसः

विषय: विशेषण प्रयोग, मात्रा भेद, तुलनात्मक शब्द, प्रश्नवाचक प्रयोग, तुमुन् प्रयोग, संयोजन (किन्तु, खलु, किल), विश्लेषण।

1. विशेषण भेद **(Adjectives)**

संस्कृत	अर्थ
पुरातनम् / नूतनम्	पुराना / नया
वहु / किञ्चित्	बहुत / थोड़ा
दीर्घः / ह्रस्वः	लंबा / छोटा (दूरी)
उन्नतः / वामनः	लंबा / नाटा (ऊँचाई)
स्थूलः / कृशः	मोटा / पतला

2. इदृशः **/** तादृशः **/** किदृशः **(This kind / That kind / What kind)**

- इदृशः स्यूतः आवश्यकः।
- तादृशः शिक्षकः आवश्यकः।
- किदृशः शिक्षकः आवश्यकः?

3. संयोजन और क्रियाविशेषण

संस्कृत	अर्थ

किन्तु	लेकिन
निश्चयेन	निश्चित रूप से
प्रायशः **/** वहुशः	अधिकतर / कई बार
अपेक्षया	की तुलना में
खलु **/** किल	निश्चित रूप से/ (जोर देने के लिए)
इव	की तरह / जैसा

4. विशेषण-विशेष्य भाव प्रयोग **(Agreement)**

- विशेषण और विशेष्य (संज्ञा) में लिंग और वचन में सहमति होनी चाहिए।
- उदाहरण**:** उन्नतः बालकः, उन्नता बालिका, उन्नतं गृहम्।

संख्या**: – 51** से **60** तक

51	एकपञ्चाशत्
52	द्विपञ्चाशत्
53	त्रिपञ्चाशत्
54	चतुःपञ्चाशत्
55	पञ्चपञ्चाशत्
56	षट्पञ्चाशत्
57	सप्तपञ्चाशत्
58	अष्टापञ्चाशत्
59	नवपञ्चाशत्

60 षष्टिः

समाप्तम् – षष्ठ दिवसः।

संस्कृत अभ्यास नई शुरुआत

संस्कृत कक्षा – सप्तमदिवसः

विषय**:** विशेषण का विभक्तियों के अनुसार प्रयोग, क्त्वा-तुमुन् रूपांतरण, स्थान-निर्देशक शब्द, तुलनात्मक/सशर्त वाक्य प्रयोग।

1. विशेषण **+** विशेष्य का समान**-**विभक्ति प्रयोग **(Agreement)**

- द्वितीया विभक्ति**:** उत्तमं बालकं पृच्छतु। उत्तमां बालिकां वदतु। उत्तमं फलं खादतु।
- तृतीया विभक्ति**:** उत्तमेन बालकेन सह पठतु। उत्तमया बालिकया सह पठामि। उत्तमेन फलेन शक्त्याः वृद्धिः भवति।
- षष्ठी विभक्ति**:** उत्तमस्य नायकस्य चित्रम्। उत्तमायाः बालिकायाः नाम प्रियंका। उत्तमस्य फलस्य नाम आम्रफलम्।

2. क्त्वा**-**तुमुन् रूप परिवर्तन

- रामः विद्यालयं गत्वा पाठं पठति। (करके)
- रामः पाठं पठितुं विद्यालयं गच्छति। (करने के लिए)

3. स्थान निर्देशक शब्द

- वर्हिः **/** अन्ते**:** विद्यालयस्य वर्हिः उद्यानम् अस्ति। विद्यालयस्य अन्ते प्रकोष्ठः अस्ति।
- रिक्तम् **/** पूर्णम्**:** प्रकोष्ठः रिक्तम् अस्ति। विद्यालयः पूर्णम् अस्ति।

4. अन्य प्रयोग

- इतोऽपि**:** और भी / इससे अधिक। इतोऽपि जलम् आवश्यकम्?
- इत्युक्ते**:** अर्थात् / यानी। गोलाप-नगरीम् इत्युक्ते जयपुरम्।
- चेत् **/** नो चेत्**:** यदि / अन्यथा। धनम् अस्ति चेत् दानं करोतु, नो चेत् मास्तु।

संख्या**: – 51** से **70** तक

61 एकषष्टिः

62 द्विषष्टिः

63 त्रिषष्टिः

64 चतुःषष्टिः

65 पञ्चषष्टिः

66 षट्षष्टिः

67 सप्तषष्टिः

68 अष्टषष्टिः

69 नवषष्टिः

70 सप्ततिः

समाप्तम् **–** सप्तमदिवसः।

संस्कृत अभ्यास नई शुरुआत

संस्कृत कक्षा – अष्टमदिवसः

विषय**:** कारण, विरोधाभास, संबंध-सूचक सर्वनाम, स्थान, संख्या इत्यादि पर आधारित प्रयोग।

1. कारण एवं विरोधाभास

- अतः/यतः**:** (इसलिए / क्योंकि) विद्यालयः विरामः यतः अद्य गणेशोत्सवः।
- यद्यपि / तथापि**:** (यद्यपि / फिर भी) यद्यपि सः बुद्धिमानः, तथापि परीक्षायाम् अनुत्तीर्णः।

2. संबंध-सूचक सर्वनाम **(Relative Pronouns)**

संस्कृत	अर्थ	उदाहरण
यत् / तत्	जो, वह (नपुंसक)	यत् पुस्तकं मम समीपे अस्ति, तत् अन्यत्र नास्ति।
यः / सः	जो, वह (पुल्लिंग)	यः पाठयति सः शिक्षकः।

या / सा	जो, वह (स्त्रीलिंग)	या चिकित्सां करोति सा वैद्या।
यत्र / तत्र	जहाँ, वहाँ	यत्र शर्करा भवति तत्र पिपीलिका आगच्छन्ति।

3. मात्रा एवं समय

- कति**:** (कितने?) कति जनाः तत्र सन्ति?
- कियत्**:** (कितना?) कियत् जलं सरोवरे अस्ति?
- यावत् / तावत्**:** (जब तक..., तब तक...) यावत् सः वदति, तावत् न करोति।

4.संख्या**: – 71** से **80** तक

71 एकसप्ततिः

72 द्विसप्ततिः

73 त्रिसप्ततिः

74 चतुःसप्ततिः

75 पञ्चसप्ततिः

76 षट्सप्ततिः

77 सप्तसप्ततिः

78 अष्टसप्ततिः

79 नवसप्ततिः

80 अशीतिः

समाप्तम् **–** अष्टमदिवसः।

संस्कृत अभ्यास नई शुरुआत

संस्कृत कक्षा – नवमदिवसः

1. चित् प्रत्ययः **(**अनिश्चितता **/** कोई **/** कभी**)**

मूल शब्द	चित् युक्त रूप	अर्थ
कदा (कब)	कदाचित्	कभी
कः (कौन)	कश्चित्	कोई
कस्य (किसका)	कस्यचित्	किसी का

-

उदाहरण**:** कदाचित् अहं प्रेक्षालयं गतवान्। कश्चित् विदूषकः आसीत्।

2. द्वयम् **(**दो का संयुक्त रूप **–** नपुंसकलिंग**)**

- बालकद्वयं गच्छन्ति। बालिकाद्वयं पिबन्ति।

3. अर्थम् (हेतु हेतु प्रयोग – ’के लिए’)

- पठनार्थं विद्यालयं गच्छामि। भोजनार्थं भोजनालयं गच्छति।

4. समयज्ञानम् **– 1:00** से **1:55** पर्यन्तम्

समय	संस्कृत रूप
1:00	एकवादनम्
1:05	पञ्चाधिक एकवादनम्
1:10	दशाधिक एकवादनम्
1:15	पादोन द्विवादनम्
1:20	विंशत्यधिक एकवादनम्
1:25	पञ्चविंशत्यधिक एकवादनम्
1:30	अर्धद्विवादनम् / एकार्धम्
1:35	पञ्चत्रिंशत् अधिक एकवादनम्
1:40	चत्वारिंशदधिक एकवादनम्
1:45	पञ्चदशोन द्विवादनम्
1:50	दशोन द्विवादनम्
1:55	पञ्चोन द्विवादनम्

5. संख्या **– 81** से **90** तक

81 एकाशीतिः

82 द्व्यशीतिः

83 त्र्यशीतिः

84 चतुरशीतिः

85 पञ्चाशीतिः

86 षडशीतिः

87 सप्ताशीतिः

88 अष्टाशीतिः

89 नवाशीतिः

90 नवतिः

6. वासराणि **(**सप्ताह के दिन**) –** पुनःस्मरणम्

- सोमवासरः, मङ्गलवासरः, बुधवासरः, गुरुवासरः, शुक्रवासरः, शनिवासरः, रविवासरः।

नवमदिवसः समाप्तः।

संस्कृत अभ्यास नई शुरुआत

संस्कृत कक्षा – दशमदिवसः

1. भोजनसम्बन्धि**-**शब्दाः

संस्कृतम्	अर्थः
ओदनम्	पका हुआ चावल
सूपः	दाल
व्यजनम्	सब्ज़ी/साइड डिश
शाकः	पत्तेदार सब्ज़ी
चिपिटकम्	चिप्स

विस्किटम्	बिस्किट

2. बन्धुवाचक-शब्दाः **(**रिश्तों के नाम**)**

संस्कृतम्	हिन्दी अर्थ
मातुलः	मामा
मातुलानी	मामी
भागिनेयः	भांजा
जनकः	पिता
जननी	माता
पितामहः	दादा
मातामही	नानी

3. रुचयः **/** स्वादः

- लवणम्**:** लवणस्य स्वादः लवणः (नमकीन)
- शर्करा**:** शर्करायाः स्वादः मधुरः (मीठा)

4. वाहनानां नामानि

- लोकयानम्, शकटयानम्, रेलयानम्

5. वेशभूषाणां नामानि

- युतकम् (कमीज़), उरकम् (अंतःवस्त्र), अङ्गवस्त्रम् (दुपट्टा), मुद्रिका (अंगूठी)

6. प्राणीनां नामानि

- व्याघ्रः, मृगः, शृगालः, काकः, भल्लूकः

7. संख्या **– 91** से **100** तक

91 एकनवतिः

92 द्विनवतिः

93 त्रिनवतिः

94 चतुर्नवतिः

95	पञ्चनवतिः
96	षण्णवतिः
97	सप्तनवतिः
98	अष्टनवतिः
99	नवनवतिः
100	शतम्

8 .संस्कृत में मुख्य रूप से **10** लकार माने जाते हैं, लेकिन स्कूल स्तर पर पढ़ाए जाने वाले **5** प्रमुख लकार ये हैं:

मुख्य **5** लकार

1. लट् लकार – वर्तमान काल
2. लङ् लकार – भूतकाल
3. लृट् लकार – भविष्यत् काल
4. लोट् लकार – आज्ञा (आदेश)
5. विधिलिङ् लकार – इच्छा / संभावना / चाहिए अर्थ

नीचे धातु √पठ् (पढ़ना) के तीनों वचन (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) में पाँचों लकारों के पूरे रूप दिए गए हैं।

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम	पठामि	पठावः	पठामः

2. लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन

प्रथम	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम	अपठम्	अपठाव	अपठाम

3. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

4. लोट् लकार (आज्ञार्थ)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम	पठानि	पठाव	पठाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए / संभावना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम	पठेयम्	पठेव	पठेम

याद रखने का आसान क्रम

लट्

- ति, तः, न्ति
- सि, थः, थ

- मि, वः, मः

लङ्

- त्, ताम्, न्
- ः, तम्, त
- म्, व, म

लृट्

- ष्यति, ष्यतः, ष्यन्ति
- ष्यसि, ष्यथः, ष्यथ
- ष्यामि, ष्यावः, ष्यामः

लोट्

- तु, ताम्, न्तु
- (धातु), तम्, त
- आनि, आव, आम

विधिलिङ्

- एत्, एताम्, एयुः
- एः, एतम्, एत
- एयम्, एव, ए

संस्कृत में लकार क्रिया के समय और भाव को दर्शाते हैं।
इन 5 लकारों का अभ्यास करने से वाक्य बनाना बहुत आसान हो जाता है।

8.संस्कृत व्याकरण में किसी शब्द (संज्ञा/सर्वनाम) का विभक्ति और वचन के अनुसार बदलने वाला रूप ही शब्द रूप कहलाता है।

उदाहरण:

शब्द: राम

- रामः (एकवचन – प्रथमा) = राम
- रामौ (द्विवचन) = दो राम
- रामाः (बहुवचन) = राम (बहुत से)

शब्द के रूप बदलते हैं क्योंकि वचन (एक/दो/बहु) और विभक्ति (कर्ता, कर्म आदि) बदलते हैं, इन्हीं बदले हुए रूपों को शब्द रूप कहते हैं।

राम शब्दरूप (अकारान्त पुल्लिंग)

विभक्ति	संस्कृत	हिंदी अर्थ
प्रथमा (कर्ता)	रामः – रामौ – रामाः	राम / दो राम / बहुत से राम
द्वितीया (कर्म)	रामम् – रामौ – रामान्	राम को / दोनों रामों को / रामों को
तृतीया (करण)	रामेण – रामाभ्याम् – रामैः	राम के द्वारा / दोनों के द्वारा / सबके द्वारा
चतुर्थी (सम्प्रदान)	रामाय – रामाभ्याम् – रामेभ्यः	राम के लिए / दोनों के लिए / सबके लिए
पंचमी (अपादान)	रामात् – रामाभ्याम् – रामेभ्यः	राम से / दोनों से / सब से
षष्ठी (सम्बन्ध)	रामस्य – रामयोः – रामाणाम्	राम का / दोनों का / सबका
सप्तमी (अधिकरण)	रामे – रामयोः – रामेषु	राम में / दोनों में / सब में
सम्बोधन	हे राम – हे रामौ – हे रामाः	हे राम / हे दोनों राम / हे सब राम

लता शब्दरूप (आकारान्त स्त्रीलिंग)

विभक्ति	संस्कृत	हिंदी अर्थ
प्रथमा (कर्ता)	लता – लते – लताः	लता / दो लताएँ / लताएँ
द्वितीया (कर्म)	लताम् – लते – लताः	लता को / दोनों लताओं को / लताओं को
तृतीया (करण)	लतया – लताभ्याम् – लताभिः	लता के द्वारा / दोनों के द्वारा / सबके द्वारा
चतुर्थी (सम्प्रदान)	लतायै – लताभ्याम् – लतेभ्यः	लता के लिए / दोनों के लिए / सबके लिए
पंचमी (अपादान)	लतायाः – लताभ्याम् – लतेभ्यः	लता से / दोनों से / सब से
षष्ठी (सम्बन्ध)	लतायाः – लतयोः – लतानाम्	लता का / दोनों का / सबका
सप्तमी (अधिकरण)	लतायाम् – लतयोः – लतासु	लता में / दोनों में / सब में
सम्बोधन	हे लते – हे लते – हे लताः	हे लता / हे दोनों लताएँ / हे लताएँ

फल शब्दरूप (नपुंसकलिंग)

विभक्ति	संस्कृत	हिंदी अर्थ
प्रथमा (कर्ता)	फलम् – फले – फलानि	फल / दो फल / फल (बहुत से)
द्वितीया (कर्म)	फलम् – फले – फलानि	फल को / दोनों फलों को / फलों को
तृतीया (करण)	फलेन – फलाभ्याम् – फलैः	फल के द्वारा / दोनों के द्वारा / सबके द्वारा
चतुर्थी (सम्प्रदान)	फलाय – फलाभ्याम् – फलेभ्यः	फल के लिए / दोनों के लिए / सबके लिए
पंचमी (अपादान)	फलात् – फलाभ्याम् – फलेभ्यः	फल से / दोनों से / सब से
षष्ठी (सम्बन्ध)	फलस्य – फलयोः – फलानाम्	फल का / दोनों का / सबका
सप्तमी (अधिकरण)	फले – फलयोः – फलेषु	फल में / दोनों में / सब में
सम्बोधन	हे फल – हे फले – हे फलानि	हे फल / हे दोनों फल / हे सब फल

किम् शब्दरूप (सर्वनाम)

पुर्लिंग (कः)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिंग (का)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

नपुंसकलिंग (किम्)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

अस्मद् शब्दरूप (मैं / हम)

पुर्लिंग/स्त्रीलिंग/नपुंसकलिंग समान

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः

चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यः
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यः
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् शब्दरूप (तुम / आप)

पुर्लिंग/स्त्रीलिंग/नपुंसकलिंग समान

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यः
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यः
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

संस्कृत में शब्द रूप विभक्ति और वचन के अनुसार बदलते हैं।
तीनों वचन का अभ्यास करने से वाक्य बनाना आसान हो जाता है

9. शब्द परिचय

रामः – राम
लता – लता
फलम् – फल
सरल वाक्य

1. रामः गच्छति। = राम जाता है।
2. लता वर्धते। = लता बढ़ती है।
3. बालकः पठति। = बालक पढ़ता है।
4. अहम् पठामि। = मैं पढ़ता हूँ।
5. त्वम् गच्छसि। = तुम जाते हो।

प्रश्न अभ्यास

1. रामः किं करोति? = राम क्या करता है?
2. लता का वर्धते? = लता क्यों बढ़ती है?

3. त्वम् किं करोषि? = तुम क्या करते हो?

संस्कृत में वाक्य बहुत सरल होते हैं।
कर्ता + क्रिया = पूरा वाक्य बनता है।

संस्कृत अभ्यास पाठ **– 2 (**शब्दरूप **+** वाक्य**)**

शब्द परिचय

रामः – राम
लता – लता
फलम् – फल

शब्दरूप अभ्यास

रामः – रामौ – रामाः = राम / दो राम / बहुत से राम
लता – लते – लताः = लता / दो लताएँ / लताएँ
फलम् – फले – फलानि = फल / दो फल / बहुत से फल

सरल वाक्य

1. रामः फलम् खादति। = राम फल खाता है।
2. लता पुष्पं वहति। = लता फूल धारण करती है।
3. बालकः पुस्तकं पठति। = बालक पुस्तक पढ़ता है।
4. अहम् संस्कृतं पठामि। = मैं संस्कृत पढ़ता हूँ।

5. त्वम् विद्यालयं गच्छसि। = तुम विद्यालय जाते हो।

प्रश्न अभ्यास

1. रामः किं खादति? = राम क्या खाता है?
2. बालकः किं पठति? = बालक क्या पढ़ता है?

3. त्वम् कुत्र गच्छसि? = तुम कहाँ जाते हो?

शब्दरूप और क्रिया को जोड़कर संस्कृत में सरल वाक्य बनते हैं।

धातुरूप (√पठ् = पढ़ना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पठति – पठतः – पठन्ति = वह पढ़ता है / दो पढ़ते हैं / सब पढ़ते हैं
पठसि – पठथः – पठथ = तुम पढ़ते हो / तुम दोनों पढ़ते हो / तुम सब पढ़ते हो
पठामि – पठावः – पठामः = मैं पढ़ता हूँ / हम दोनों पढ़ते हैं / हम सब पढ़ते हैं

लङ् लकार (भूतकाल)

अपठत् – अपठताम् – अपठन् = उसने पढ़ा / दोनों ने पढ़ा / सबने पढ़ा
अपठः – अपठतम् – अपठत = तुमने पढ़ा / तुम दोनों ने पढ़ा / तुम सबने पढ़ा
अपठम् – अपठाव – अपठाम = मैंने पढ़ा / हमने दोनों ने पढ़ा / हमने सबने पढ़ा

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पठिष्यति – पठिष्यतः – पठिष्यन्ति = वह पढ़ेगा / दोनों पढ़ेंगे / सब पढ़ेंगे
पठिष्यसि – पठिष्यथः – पठिष्यथ = तुम पढ़ोगे / तुम दोनों पढ़ोगे / तुम सब पढ़ोगे
पठिष्यामि – पठिष्यावः – पठिष्यामः = मैं पढ़ूँगा / हम दोनों पढ़ेंगे / हम सब पढ़ेंगे

तीनों काल में क्रिया बदलती है**:**

- लट् **=** वर्तमान
- लङ् **=** भूत
- लृट् **=** भविष्य

10. आत्मपरिचयः **– (**एक विषयः**, 10** वाक्यानि**)**

- विषय **– “**बालकः**”** उदाहरण**:**
    1. मम नाम उपेन्द्रः अस्ति।
    2. अहं छात्रः अस्मि।
    3. अहं दशमकक्ष्यायां पठामि।
    4. मम विद्यालयस्य नाम सरस्वती विद्या मन्दिरम् अस्ति।
    5. अहं प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छामि।
    6. मम पिता शिक्षकः अस्ति।
    7. मम माता गृहिणी अस्ति।
    8. मम प्रियविषयः संस्कृतम् अस्ति।
    9. मम परिवारे पञ्च जना: सन्ति

दशमदिवसः समाप्तः।

एक भारत, नेक भारत, अनेक परंपराएं।

सा विद्या या विमुक्तये।

विद्या वही जो बंधनों से मुक्ति दिलाए।